आरती श्री गंगा जी की (३)

महारानी गंगा मैया मेरा उद्धार करदे,
कृपा से अपनी माता बेड़े को पार करदे ।
स्वर्ग से आई मैया जगत के तारने को,
चरणों में लगाले मुझको इतना उपकार करदे ।
तेरा प्रवाह मैया पापों का नाश करता,
भक्तों की खीतिर मैया अमृत की धार करदे ।
बनके सवाली मैया आए जो द्वार तेरे,
तू जगदम्बे उसका पूरा भण्डार भरदे ।
चमन नादान मैया करता सदा विनती,
जगत की जननी सुखिया सारा संसार करदे ।

विवरण

हे गंगा मइया ! आप हमारा कल्याण कीजिए तथा हम पर दया करके हमारे जीवन को किनारा दीजिए । आप स्वर्ग से आईं, इस संसार के पापों का नाश करने, आप हम पर कृपा करके हमें अपने चरणों से लगा लीजिए । आपकी लहरें हमारे सभी पाप कर्मो को नष्ट कर देती हैं ।

आप अपने भक्तों के लिए अपने जल की धारा को अमृत की धारा बना दीजिए । आपसे तरह - तरह का सवाल लेकर आपके सेवक आपके चरणों में आये हैं, आप उनकी सभी इच्छाओं को पूरा कर दीजिए । आपका भक्त चमन आपसे विनती कर रहा है कि हे माता! आप इस सम्पूर्ण संसार को खुशहाल जिन्दगी प्रदान कीजिए।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.